



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्मुखार पत्र का नाम  
२१ नं. जा७१२०

दिनांक  
६-१२-२३

पृष्ठ संख्या  
५

कॉलम  
२७

## हरियाणा कृषि विवि के अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में आइसीएआर में मक्का विभाग के पूर्व डायरेक्टर ने मक्का उपज बढ़ाने पर दिया जोर जलस्तर में होगा सुधार, प्रदूषण भी होगा नियंत्रित

जागरण संवाददाता, हिसार : उत्तर भारत मक्का की फसल के लिए अग्रणी था। मार घीरे-घीरे मक्का की फसल की जगह धान ने ले ली। हरियाणा के अलावा पंजाब में धान ज्यादा उगाई जाने लगी। उसका नुकसान वह हुआ है जिमीन का पानी आज के समय में काफी नीचे चला गया है। साथ ही धान की कटाई के बाद जलाई जाने वाली पराली से प्रदूषण का स्तर भी बढ़ गया है। उत्तर भारत में पानी का स्तर सही हो और प्रदूषण न हो इसके लिए मक्का की फसल को दोबारा से उगाने के लिए जोर दिया गया है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वैशिक खाद्य-पोषण सुक्ष्मा, स्थिति और स्वास्थ्य के लिए रणनीति विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन विभिन्न विषयों पर तकनीकी सभों का आयोजन किया गया। इसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों ने वैशिक पोषण और स्वास्थ्य के लिए आज श्रीअनंत, कृषि व्यवस्था के लिए कृषि उद्यमिता और उद्योग संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, टिकाऊ कृषि के लिए संसाधन प्रबंधन और एकीकृत खेती आदि विषय पर व्याख्यान दिए।

**हरियाणा सरकार दे रही बढ़ावा**  
हरियाणा सरकार की तरफ से धान की डायप दूसरी फसल को उगाने पर किसानों को सात जगज रुपये देने का नियम किया हुआ है। वह काफी किसानों को दे रखी है। डा. सेन दास ने बताया कि यह सरकार का बेहतर कदम है और काफी किसान धान को छोड़ कर दूसरी फसल पर गए हैं।

धान के बगबर मक्का की पैदावार मक्का की पैदावार धान के बगबर है। अपी धान की सरकार की तरफ से खरीद भी जात है तो किसान को उगाना है। इसके अलावा मक्का में प्रोटीन और न्यूट्रिशन भी ज्यादा है। यदि मक्का उगाया जाता है तो उसकी मांग भारत ही नहीं अतिरिक्त दूसरे देशों में भी काफी ज्यादा है। मक्का को देखते ही देश में माय प्रदेश और कर्नाटक में सबसे ज्यादा उगाया जाता है। मक्का प्रोडक्शन ज्यादा ही नहीं है। इसके अलावा मक्का को औद्योगिक धान से बचा का सकता है। उन्होंने कहा कि धान की फसल उस राज्य की है जहाँ 1200 मिली मीटर तक वर्षा होती है। करार है इस फसल के लिए पानी काफी ज्यादा चाहिए।

## जलवायु परिवर्तन से लेकर संरक्षित कृषि पर हुए व्याख्यान

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वैशिक खाद्य-पोषण सुक्ष्मा, स्थिति और स्वास्थ्य के लिए रणनीति विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन विभिन्न विषयों पर तकनीकी सभों का आयोजन किया गया। इसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों ने वैशिक पोषण और स्वास्थ्य के लिए आज श्रीअनंत, कृषि व्यवस्था के लिए कृषि उद्यमिता और उद्योग संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, टिकाऊ कृषि के लिए संसाधन प्रबंधन और एकीकृत खेती आदि विषय पर व्याख्यान दिए।



हृषि में आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन मंच पर देश-विदेशों के शोध संस्थानों से आए वैज्ञानिक। जागरण।

## जलवायु परिवर्तन व पशुधन उत्पादन : प्रभाव और अनुकूलन रणनीतियां विषय पर दिया व्याख्यान

डा. सुरेन ने मैट्रिकोलिक इंजीनियरिंग विषय पर व डा. गुरुदेव चंद ने हाईड्रोपैनिक फार्मिंग विषय पर अपने व्याख्यान दिए। पांचवें सत्र में फसल उत्पादन में जीविक व अंतर्विक तंत्रज्ञ प्रबंधन विषय के अंतर्गत पांचों से डा. डिलर एच. त्रुट्ज और नानाकुरुक चेयरपर्सन रहे। उन्होंने वैशिक जलवायु परिवर्तन विषय पर शोध पत्र भी प्रस्तुत किया। साथ ही को-चेयरपर्सन ब्राजील से डा. प्रसिद्धिको फरिङ्गों ने ब्राजील में जीत प्रणाली प्रबंधन विषय पर व्याख्यान दिया। दूसरे सत्र में माडलिंग, साइमलूरेशन तथा विगडा प्रबंधन विषय पर चेयरपर्सन मैट्सिसको से डा. मैट्सिसल मैट्सिंडोवा ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया।



देशी वरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान उपस्थित कुलपति प्रोफेसर श्रीआर कालार व अन्य। जागरण।

और पशुधन रहा, जिसकी अध्यक्षता मिस्ट्री के डा. होसम रुखानी ने की व जलवायु परिवर्तन और पशुधन उत्पादन : प्रभाव और अनुकूलन रणनीतियां विषय पर व्याख्यान दिया। वही, रात को सार्कूलिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।



एंड एम यूनिवर्सिटी के संकाय फली प्रोफेसर सजिंजा सी. कापारेडा चेयरपर्सन की भूमिका निभाते हुए मार्गीनीकरण आधारित कृषि पदार्थ विषय पर गणनीयता बताइ। इसमें भूमिका निभाते हुए कृषि विविध विषयों के प्रधारण के पेटने के बारे में चर्चा की। चौथे सत्र में अमेरिका की टेम्परामेंट्री

नेतृत्व पुरुषराज के सह-विजेता रहे। डायरेक्टर अटारी डा. परविंद प्रोफेसर अर्पर सी. रेडकर ने श्योराज ने धान की पराली प्रबंधन अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सत्र पर आयोजित विषय पर व्याख्यान दिया। तीव्रे सत्र में किसानों तक आधिकारिक तकनीकों को पहुंचाना विषय के अंतर्गत

मत्स्यविषय के आइसीसीसी नेतृत्व पुरुषराज के सह-विजेता रहे। डायरेक्टर अटारी डा. परविंद प्रोफेसर अर्पर सी. रेडकर ने श्योराज ने धान की पराली प्रबंधन अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सत्र पर मत्स्यविषय के अंतर्गत विषय पर व्याख्यान दिया। सह-चेयरपर्सन उदयपुर से आए

मत्स्यविषय विशेषज्ञ डा. बीके शर्मा नेतृत्व पुरुषराज के सह-विजेता रहे। डायरेक्टर अटारी डा. परविंद प्रोफेसर अर्पर सी. रेडकर ने श्योराज ने धान की पराली प्रबंधन अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सत्र पर मत्स्यविषय के अंतर्गत विषय पर व्याख्यान दिया। तीव्रे सत्र में अमेरिका की टेम्परामेंट्री



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सुसाचार पत्र का नाम  
दिनांक भास्कर

दिनांक  
६.१२.२३

पृष्ठ संख्या  
२

कॉलम  
३-६

## मंथन • हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में वैज्ञानिकों ने जताई चिंता ग्लोबल वार्मिंग से पिघल रहे ग्लोशियर, भारत समेत कई देशों में मीठे पानी पर भी संकट

वशापाल सिंह | हिसार

आर्कटिक और अंटार्कटिक के भाग वैश्वक औसत की तुलना में बहुत तेजी से गर्म हो रहे हैं। यहां बर्फ की मात्रा तेजी से घट रही है। 21वीं सदी के मध्य तक आर्कटिक में गर्मियों के समय में समुद्री बर्फ के पूरी तरह से नष्ट होने का अनुमान है। इससे अंटार्कटिक, ग्रीनलैंड, भारत के हिमालयन समेत दुनिया के ग्लोशियर पिघलने से कई देशों में मीठे पानी की समस्या हो सकती है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'वैश्वक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति' विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने आए जर्जनी के ओसानुकूल यूनिवर्सिटी ऑफ एलाइड साइंसेज के प्रोफेसर डॉ. डिटर एच. ट्रॉटर ने यह बतें सांझा किया। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के वैश्वक और क्षेत्रीय पहलू पर शोध किया है।

### हिंद महासागर और प्रशांत महासागर में तूफान का बदल रहा पैटर्न



हिसार | सम्मेलन के दूसरे दिन मंच पर मौजूद देश-विदेशों के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिक।

दुनिया भर में छह प्रमुख क्षेत्रों में तूफान आते हैं। ये क्षेत्र हैं उत्तर अटलाटिक, उत्तरपूर्वी प्रशांत, उत्तर-परिचमी प्रशांत, दक्षिण-पश्चिमी प्रशांत और उत्तर और दक्षिण हिंद महासागर। प्रत्येक क्षेत्र ग्लोबल वार्मिंग के कारण होने वाले तूफान के पैटर्न में बदलाव हो रहा है। समुद्र की सतह का तापमान गर्म होने पर उनकी हवाएं और अधिक तीव्र हो जाती हैं।

दक्षिण अफ्रीका में 75 से 250 मिलियन लोगों के सूखे और पीने के पानी की कमी की चपेट में आने का अनुमान है। अनेक वाले समय में भोजन का संकट भी वैश्वक आबादी के समक्ष खड़ा हो सकता है। भारत

सहित एशिया के कुछ क्षेत्रों में स्वच्छ मीठे पानी की कमी होने का अनुमान है। उत्तरी भारत को भी हिमालयन ग्लोशियर से पानी मिलता है। यहां भी संकट पैदा हो सकता है। जलवायु परिवर्तन के कारण ऊंचे पर्वतीय

अल नीनो व ला नीनो का हो सकता है प्रभाव भारत में अल नीनो और ला नीनो की घटनाओं और मौसी मानसून जैसे चक्र जलवायु के गर्म होने पर बदल सकते हैं। अल नीनो व ला नीना प्रशांत महासागर और आसपास के क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं, लेकिन वैज्ञानिक पता लगा रहे हैं कि इनका प्रभाव दुनिया के अन्य क्षेत्रों पर भी पड़ सकता है।

**समुद्रों का बढ़ रहा स्तर, छोटे द्वीपों पर खतरा**  
समुद्र के बढ़ते स्तर का दुनियाभर के तटीय क्षेत्रों और द्वीपों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका है। बांगलादेश और नीदलैंड के देशों में बड़े क्षेत्र, अमेरिकी राज्य फ्लोरिडा व न्यू ऑर्लिन शहर समुद्र तल से थोड़ा ही ऊपर है। यहां समुद्र स्तर में थोड़ी सी भी वृद्धि होने का बड़ा खतरा है।

क्षेत्रों और अंटार्कटिका जैसे द्वीपों में रहने वाले जीव-जंतुओं की कुछ प्रजातियों के भी समाप्त होने का खतरा बना है। प्रशांत महासागर के आसपास के छोटे द्वीप विश्व के मानचित्र से मिट जाएंगे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम  
**अभ्यन्तरीन संबंध**

दिनांक  
**6-12-23**

पृष्ठ संख्या  
**2**

कॉलम  
**उत्पादन: प्रभाव और अनुकूलन रणनीतियाँ**

## कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा और जोत प्रबंधन करना बेहद जरूरी

एचएयू में चल रहे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य से जुड़े शोध पत्र किए प्रस्तुत

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन मंगलवार को विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए वैज्ञानिकों ने व्याख्यान प्रस्तुत किए।

पहले सत्र का मुख्य विषय जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, संसाधन प्रबंधन एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन रहा, जिसमें जर्मनी से डॉ. डिटर एच ट्रुटज औस्नाजुरक चेयरपर्सन रहे। उन्होंने वैश्विक जलवायु परिवर्तन विषय पर शोध पत्र भी प्रस्तुत किए। साथ ही को-चेयरपर्सन ब्राजील से डॉ. फ्रांसिस्को फारिगों ने ब्राजील में जोत प्रणाली प्रबंधन विषय पर विचार रखे। दूसरे सत्र में मॉडलिंग, साइमुलेशन और बिग डाटा प्रबंधन विषय पर चेयरमैन मैक्सिस्को से डॉ. मैक्सिवेल मक्कोडीबा ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। सह-चेयरमैन जापान से डॉ. टाकुरो शिनानो ने जापान की कृषि पर



एचएयू में चल रहे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में मौजूद शोध संस्थानों से आए वैज्ञानिक। संवाद

न्यूकिलियर हादसे के प्रभाव पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया।

तीसरे सत्र में किसानों तक आधुनिक तकनीकों को पहुंचाना विषय के तहत चेयरपर्सन फ्रांस के अर्झीपीसीसी नोबेल पुरस्कार के सह-चेयरमैन की भूमिका निभाते हुए मर्शीनीकरण आधारित कृषि पद्धति विषय पर रणनीतियां बताईं, जिसमें डॉ. मुकेश जैन ने सह-चेयरमैन की भूमिका निभाई। डॉ. सुरेन्द्र ने मैटाबोलिक इंजीनियरिंग विषय पर व डॉ. गुरुदेव चंद ने हाइड्रोपोनिक फार्मिंग विषय पर अपने व्याख्यान दिए।

पांचवें सत्र में फसल उत्पादन में जैविक व अजैविक तनाव प्रबंधन विषय के अंतर्गत पौलेंड से डॉ. टकाओ इशिकावा ने एंजाइमेटिक डाइवर्सिटी विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया। छठे सत्र का विषय 'कृषि

अर्थव्यवस्था के लिए कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण जीव, जलकृषि और पशुधन' रहा, जिसको अध्यक्षता मिस्र के डॉ. होसम रुशदी ने की व जलवायु परिवर्तन और पशुधन उत्पादन: प्रभाव और अनुकूलन रणनीतियाँ विषय पर व्याख्यान दिया। सातवें सत्र में फ्रांस से डॉ. बोचाइब खदरी ने 'खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए उद्योग संपर्क और कृषि व्यवसाय' विषय पर व्याख्यान दिया।

काजाखस्तान से डॉ. विक्टर कामिकिन ने 'ओषधीय फसल को कोविड-19 के खिलाफ दबाओं के स्त्रोत के रूप में उपयोग' विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया। आठवें सत्र में आइसीएआर, नई दिल्ली से आए डॉ. सेन दास ने 'वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए श्रीअन्' विषय पर अध्यक्षता कर अपना व्याख्यान दिया।

नौवें सत्र में डेनमार्क से डॉ. अहमद जहूर ने फसल सुधार के लिए पारंपरिक प्रजनन, जैव प्रौद्योगिकी, जैव सूचना विज्ञान, अनुवांशिक इंजीनियरिंग, जिनोमिक्स, जीनोमिक्स और प्रोटोटाइपोनिक्स' विषय पर अध्यक्षता करते हुए अपना व्याख्यान दिया। दसवें सत्र में जापान से प्रो. यो तोमा ने 'स्वास्थ्य के लिए प्राकृतिक और जैविक खेती' विषय पर अपने व्याख्यान दिया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाप्तिवार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दृष्टि भूमि	6-12-23	9	2-6

✓ **हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने सम्मेलन का दूसरा दिन**

## वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा पर पेश किए शोधपत्र

- देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिक
- ब्राजील में जोत प्रणाली प्रबंधन विषय पर व्याख्यान दिया

हरिगूनि न्यूज ► हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। इसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों ने वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए बाजरा श्रीअन्न, कृषि-व्यवसाय के लिए कृषि-उद्यमिता और उद्योग



हिसार। मंच पर मौजूद देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिक।

संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, टिकाऊ कृषि के लिए संसाधन प्रबंधन और एकीकृत खेती, फसल उत्पादन में जैविक और अजैविक तनाव प्रबंधन की विधियां, प्राकृतिक व जैविक खेती,

कृषि उत्पादन बढ़ाने में सूक्ष्म जीवों का योगदान सहित अनेक विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। पहले सत्र का मुख्य विषय जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, संसाधन प्रबंधन एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन रहा, जिसमें

### मशीनीकरण आधारित कृषि पर रणनीतियां बताईं

तीसरे सत्र में किसानों तक आधुनिक तकनीकों को पहुंचाना विषय के अंतर्गत चेयरपर्सन फ्रांस के आईपीसीसी नोबेल पुरस्कार के सह-विजेता प्रोफेसर आर्थर सी. रिडेकर ने अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर टिकाऊ फसल उत्पादन व समग्र विकास विषय पर व्याख्यान दिया, जबकि सह-चेयरमैन उदयपुर से आए मत्सस्य विशेषज्ञ डॉ. बी.के. शर्मा रहे। डायरेक्टर अटारी डॉ. परविंदर श्योराण ने धान की पराली प्रबंधन व डॉ. रामसिंह ने मेघालय राज्य के घरेलू स्तर पर खाद्य पदार्थों के सेवन के पैटर्न के बारे में चर्चा की। चौथे सत्र में अमेरिका की टेक्सास ए एंड एम यूनिवर्सिटी के सकाय फेलो प्रोफेसर सर्जिओ सी. कापारेडा चेयरमैन की भूमिका निभाते हुए मशीनीकरण आधारित कृषि पद्धति विषय पर रणनीतियां बताईं।

जर्मनी से डॉ. डिटर एच. त्रुट्ज औस्नाबुरक चेयरपर्सन रहे। उन्होंने वैश्विक जलवायु परिवर्तन विषय पर शोध पत्र भी प्रस्तुत किया। साथ ही को-चेयरपर्सन ब्राजील से डॉ. फ्रांसिस्को फगिंओं ने ब्राजील में जोत प्रणाली प्रबंधन विषय पर व्याख्यान दिया। दूसरे सत्र में मॉडलिंग, साइमुलेशन तथा बिग

डाटा प्रबंधन विषय पर चेयरमैन मैक्सिस्को से डॉ. मैक्सवेल मकोंडीवा ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। सह-चेयरमैन जापान से डॉ. टाकुरो शिनानो ने जापान की कृषि पर न्यूक्लियर हादसे के प्रभाव पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

~~समाचार पत्र का नाम~~  
~~दैनिक भास्तु~~

दिनांक  
६.१२.२२

पृष्ठ संख्या  
।

कॉलम  
।-५

## भास्तु • एचएयू के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में जापान के होक्काइडो विवि के प्रोफेसर डॉ. यो टोमा ने सांझा किया शोध ग्रीन हाउस गैस के गोबर से निकलती सीएच-4 व एन 2 ओ गैस बढ़ा रही ग्रीन हाउस गैसें, चराई का तरीका बदल कर सकते हैं इनका उत्सर्जन

भास्तु न्यूज़ | हिसार

ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन को कम करना अब विश्वव्यापी मुद्दा बन गया है। पर्यावरण में ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन में पशुओं को भी महत्वपूर्ण खोत माना जाता है। पशुधन वर्ग में सीएच-4 और एन 2 ओ उत्सर्जन को कम करना आवश्यक है।



प्रोफेसर डॉ. यो टोमा।

गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल क्रियाओं द्वारा सीएच-4 उत्सर्जन और गोबर और मूत्र से सीएच-4 और एन 2 ओ का उत्सर्जन होता है। एचएयू में तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में हिस्सा लेने पहुंचे जापान के होक्काइडो विश्वविद्यालय के कृषि अनुसंधान संकाय में मृदा विज्ञान प्रयोगशाला के प्रोफेसर डॉ. यो टोमा ने कही। वे जापानी सोसायटी ऑफ सॉयल साइंस एंड प्लांट न्यूट्रिशन के निदेशक हैं।

### पशु के गोबर और मूत्र से उनके उत्सर्जन कारकों का किया अध्ययन

उन्होंने बताया कि जापान में किए हालिया अध्ययन से पाया कि पशु की चराई प्रणाली को बदलने से पशुधन वर्ग में जीएचजी उत्सर्जन में संभावित रूप से कमी आती है। हालांकि, चराई द्वारा ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का अनुमान लगाने में बड़ी अनिश्चितता एं हैं। हमने सीएच 4 और एन 2 ओ उत्सर्जन और पशु के गोबर और मूत्र से उनके उत्सर्जन कारकों का अध्ययन किया। इसके अलावा, मानवरहित हबाई वाहन यूएवी द्वारा ली गई तस्वीरों और गहन शिक्षण मॉडल के साथ ऑब्जेक्ट डिटेक्शन मॉडल के संयोजन से पशुओं के गोबर का पता लगाने के लिए कुशल माप पद्धति स्थापित करने का भी प्रयास किया। गोबर से सीएच 4, गोबर से एन 2 ओ, और मूत्र से एन 2 ओ के उत्सर्जन कारकों में अलग-अलग मौसम में अलग-अलग स्थानों पर बड़े अंतर देखे गए। इसलिए, उत्सर्जन कारकों के सटीक अनुमान के लिए तंत्र और मॉडलिंग भविष्य के शोध का विषय है और इस पर और बहतरी से कम करने की जरूरत है।

कृषि मशीनीकरण के बिना आधुनिक खेती को बढ़ाना असंभव, उपज के अंतराल को भी करता है कम

कृषि मशीनीकरण के बिना आधुनिक खेती की और बढ़ाना असंभव सा है। पिछले लम्बे समय से किसानों ने मशीनीकरण को श्रम विस्थापन और मिट्टी संघनन का कारण मानकर इससे दूरी बना रखी थी। हालिया समय में बढ़ती जनसंख्या, जलवायु परिवर्तन, बेहतर नौकरियों और वेतन के लिए ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर प्रवास, दुनिया भर में खान-पान में बदलाव और नीतिगत सद्भावना ने मशीनीकरण को वापस ला दिया है। एचएयू में जारी तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में हिस्सा लेने पहुंचे आईआरआरआई दक्षिण।

एशिया क्षेत्रीय केंद्र, वाराणसी से डॉ. राबे याह्या ने यह बात सांझा की। उन्होंने कहा कि महत्वपूर्ण बात यह है कि यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो चुका है कि मशीनीकरण उपज अंतराल को कम करने और नुकसान को खत्म करने के लिए एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक की भूमिका निभाता है। यह जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन और अनुकूलन को बढ़ाते हुए महान और टिकाऊ प्रभाव उत्पन्न करने में योगदान देता है। हालांकि, जैसे-जैसे जलवायु बदल रही है। कृषि मशीनीकरण को स्मार्ट बनाने की तत्काल आवश्यकता है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का ताम  
पंजाब ५२२।

दिनांक  
6.12.23

पृष्ठ संख्या  
५

कॉलम  
५-८

## विशेषज्ञों ने 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य से जुड़े विषयों पर प्रस्तुत किए शोध पत्र

हिसार, 5 दिसम्बर (ब्लूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति' विषय पर आयोजित 3 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों ने वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए बाजरा श्रीअन्न, कृषि-व्यवसाय के लिए कृषि-उद्यमिता और उद्योग संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, टिकाऊ कृषि के लिए संसाधन प्रबंधन और एकीकृत खेती, फसल उत्पादन में जैविक और अजैविक तनाव प्रबंधन की विधियां, प्राकृतिक व जैविक खेती, कृषि उत्पादन बढ़ाने में सूक्ष्म जीवों का योगदान सहित अनेक विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए।

पहले सत्र का मुख्य विषय जलवायु



हक्किम में आयोजित 3 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन मंच पर मौजूद देश-विदेशों के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिक।

परिवर्तन, संरक्षित कृषि, संसाधन प्रबंधन एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन रहा, जिसमें जर्मनी से डॉ. डिटर एच. त्रुट्ज ओस्नाब्रुक चेयरपर्सन रहे। उन्होंने वैश्विक जलवायु परिवर्तन विषय पर शोध पत्र भी प्रस्तुत किया। साथ ही को-चेयरपर्सन ब्राजील से डॉ. फ्रांसिस्को फागिंओं ने ब्राजील में जोत प्रणाली प्रबंधन विषय पर व्याख्यान दिया। दूसरे सत्र में मॉडलिंग, साइमुलेशन तथा बिग डाटा प्रबंधन विषय पर चेयरमैन मैक्सिको से डॉ.

मैक्सिकोल मकोंडीवा ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। सह-चेयरमैन जापान से डॉ. टाकुरो शिनानो ने जापान की कृषि पर न्यूक्लियर हादसे के प्रभाव पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया।

तीसरे सत्र में किसानों तक आधुनिक तकनीकों को पहुंचाना विषय के अंतर्गत चेयरपर्सन फ्रांस के आई.पी.सी.सी. नोबेल पुरस्कार के सह-विजेता प्रोफैसर आर्थर सी. रिडेकर ने अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर

पर टिकाऊ फसल उत्पादन व समग्र विकास विषय पर व्याख्यान दिया, जबकि सह-चेयरमैन उदयपुर से आए मत्सस्य विशेषज्ञ डॉ. बी.के. शर्मा रहे। डायरेक्टर अटारी डॉ. परविंदर श्योराण ने धान की पराली प्रबंधन व डॉ. रामसिंह ने मेघालय राज्य के घरेलू स्तर पर खाद्य पदार्थों के सेवन के पैटर्न के बारे में चर्चा की।

चौथे सत्र में अमरीका की टेक्सास ए एंड एम यूनिवर्सिटी के संकाय फेलो प्रोफैसर सर्जिंओ सी. कापारेडा चेयरमैन

की भूमिका निभाते हुए मशीनीकरण आधारित कृषि पद्धति विषय-रणनीतियां बताईं, जिसमें डॉ. मुकेश जैन ने सह-चेयरमैन की भूमिका निभाई। डॉ. सुरेंद्र ने मैटार्बोली इंजीनियरिंग विषय पर व डॉ. गुरुदेव चंद ने हाईड्रोपोनिक फार्मिंग विषय पर अपने व्याख्यान दिए।

अन्य सत्रों में वैज्ञानिकों ने कृषि अर्थव्यवस्था के लिए कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण जीव, जलकृषि और पशुधन, जलवायु परिवर्तन और पशुधन उत्पादन: प्रभाव और अनुकूलन रणनीतियां विषय-खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए उद्योग संपर्क और कृषि व्यवसायों के लिए उत्पादन व समग्र विषय पर, 'औषधीय फसल' कोविड-19 के खिलाफ दंडनाल के स्त्रोत के रूप में उपयोग' विषय पर, 'वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए श्रीअन्न' विषय पर अपने व्याख्यान दिए।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाप्ति पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
२१ निक्ट २०२३	६-१२-२३	५	५-७

वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा विषय पर हिसार कृषि विवि में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

## श्रीअन्न पर वैज्ञानिकों ने प्रस्तुत किए शोध पत्र

हिसार, 5 दिसंबर (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन मंगलवार को विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। इसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों ने वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए बाजरा श्रीअन्न, कृषि-व्यवसाय के लिए कृषि-उद्यमिता और उद्योग संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, टिकाऊ कृषि के लिए संसाधन प्रबंधन और एकीकृत खेती, प्राकृतिक



हिसार में मंगलवार को चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पहुंचे कृषि वैज्ञानिक। -हप्र

व जैविक खेती, कृषि उत्पादन बढ़ाने में सूक्ष्म जीवों का योगदान सहित अनेक विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। पहले सत्र का मुख्य विषय जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, संसाधन प्रबंधन एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन रहा, जिसमें जर्मनी से डॉ.

डिटर एच. त्रुट्ज ओस्नाबुरक चेयरपर्सन रहे। उन्होंने वैश्विक जलवायु परिवर्तन विषय पर शोध पत्र भी प्रस्तुत किया।

साथ ही को-चेयरपर्सन ब्राजील से डॉ. फ्रांसिस्को फगिंओ ने ब्राजील में जोत प्रणाली प्रबंधन विषय पर

व्याख्यान दिया। दूसरे सत्र में मॉडलिंग, साइमुलेशन तथा बिग डाटा प्रबंधन विषय पर चेयरमैन मैक्सिस्को से डॉ. मैक्सवेल मकोंडीवा ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। सह-चेयरमैन जापान से डॉ. टाकुरो शिनानो ने जापान की कृषि पर न्यूक्लियर हादसे के प्रभाव पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया।

तीसरे सत्र में किसानों तक आधुनिक तकनीकों को पहुंचाना विषय के अंतर्गत चेयरपर्सन फ्रांस के आईपीसीसी नोबेल पुरस्कार के सह-विजेता प्रोफेसर आर्थर सी. रिडेकर ने अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर टिकाऊ फसल उत्पादन व समग्र विकास विषय पर व्याख्यान दिया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम  
अजौत समाज

दिनांक  
६-१२-२३

पृष्ठ संख्या  
१०

कॉलम  
५-४

## विशेषज्ञों ने वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य से जुड़े विषयों पर प्रस्तुत किए शोध प्र

हिसार, 5 दिसम्बर (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों ने वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए बाजरा श्रीअन्न, कृषि-व्यवसाय के लिए कृषि-उद्यमिता और उद्योग संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, टिकाऊ कृषि के लिए संसाधन प्रबंधन और एकीकृत खेती, फसल उत्पादन में जैविक और अजैविक तनाव प्रबंधन की विधियां, प्राकृतिक व जैविक खेती, कृषि उत्पादन बढ़ाने में सूक्ष्म जीवों का योगदान सहित अनेक विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। पहले सत्र का मुख्य विषय जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, संसाधन प्रबंधन एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन रहा,

जिसमें जर्मनी से डॉ. डिटर एच. त्रुट्ज ओस्नाबूक के येर पर्सन रहे। उन्होंने वैश्विक जलवायु परिवर्तन



विषय पर हक्की में आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन मंच शोध पत्र भी पर मौजूद देश-विदेशों के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिक। शोध प्रस्तुत किया। तीसरे सत्र में साथ ही को-चेयरपर्सन ब्राजील से डॉ. फ्रांसिस्को फग्गिओं ने ब्राजील में जोत प्रणाली प्रबंधन विषय पर व्याख्यान दिया। दूसरे सत्र में मॉडलिंग, साइमुलेशन तथा बिग डाटा प्रबंधन विषय पर चेयरमैन मैक्सिको से डॉ. मैक्सवेल मकोंडीवा ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। सह-चेयरमैन जापान से डॉ. टाकुरो शिनानो ने जापान की कृषि पर न्यूकिलयर हादसे के प्रभाव पर मुख्य

स्तर पर खाद्य पदार्थों के सेवन के पैटर्न के बारे में चर्चा की। चौथे सत्र में अमेरिका की टेक्सास ए एंड एम यूनिवर्सिटी के संकाय फेलो प्रोफेसर सर्जिओ सी. कापारेडा चेयरमैन की भूमिका निभाते हुए मशीनीकरण आधारित कृषि पद्धति विषय पर रणनीतियां बताई, जिसमें डॉ. मुकेश जैन ने सह-चेयरमैन की भूमिका निभाई। डॉ. सुरेंद्र ने मैटाबोलिक इंजीनियरिंग विषय पर व डॉ. गुरुदेव चंद ने हाईड्रोपोनिक फार्मिंग विषय पर अपने व्याख्यान दिए। पांचवें सत्र में फसल उत्पादन में जैविक व अजैविक तनाव प्रबंधन विषय के अंतर्गत पौलेंड से डॉ. ट्काओ इशिकावा ने एंजाइमेटिक डाइवर्सिटी विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया व चेयरमैन की भूमिका अदा की, जबकि कजाखस्तान से डॉ.

विक्टर कामकिन ने सह-चेयरमैन की भूमिका निभाई। छठे सत्र का विषय 'कृषि अर्थव्यवस्था के लिए कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण जीव, जलकृषि और पशुधन' रहा, जिसकी अध्यक्षता मिस्ट्र के डॉ. होसम रूशादी ने की व जलवायु परिवर्तन और पशुधन उत्पादन प्रभाव और अनुकूलन रणनीतियां' विषय पर व्याख्यान दिया। सातवें सत्र में फ्रांस से डॉ. बोचाइब खदरी ने 'खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए उद्योग संपर्क और कृषि व्यवसाय' विषय पर व्याख्यान दिया, साथ ही सत्र की अध्यक्षता की। कजाखस्तान से डॉ. विक्टर कामकिन ने 'औषधीय फसल को कोविड-19 के खिलाफ दवाओं के स्रोत के रूप में उपयोग' विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया। आठवें सत्र में आइसीएआर, नई दिल्ली से आए डॉ. सेन दास ने 'वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए श्रीअन्न' विषय पर अध्यक्षता कर अपना व्याख्यान दिया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूँ	६-१२-२२	५	१-३

## विशेषज्ञों ने 'वैशिवक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य' विषय पर प्रस्तुत किए शोध पत्र

हिसार(सच कहूँ/मांगे लाल)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'वैशिवक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य' के लिए 'रणनीति' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। जिसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों ने वैशिवक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए बाजरा श्रीअन्न, कृषि-व्यवसाय के लिए कृषि-उद्यमिता और उद्योग संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, प्राकृतिक व जैविक खेती, कृषि उत्पादन बढ़ाने में सूक्ष्म जीवों का योगदान सहित अनेक विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। पहले सत्र का मुख्य विषय जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, संसाधन प्रबंधन एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन रहा।



जिसमें जर्मनी से डॉ. डिटर एच. ब्रट्ज औस्नाब्रुक चेयरपर्सन रहे। जापान की कृषि पर न्यूकिलयर उन्होंने वैशिवक जलवायु परिवर्तन विषय पर शोध पत्र भी प्रस्तुत किया। दूसरे सत्र में मॉडलिंग, साइमुलेशन तथा बिग डाटा प्रबंधन विषय पर चेयरमैन मैक्सिको से डॉ. मैक्सवेल मकोंडीवा ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। सह-चेयरमैन डॉ. टाकुरो शिनानो ने अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर टिकाऊ फसल उत्पादन व समग्र विकास विषय पर व्याख्यान दिया।

## एशियू में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन • तीन दिवसीय सम्मेलन में 15 देशों के करीब 900 वैज्ञानिक और शोधार्थी ले रहे हैं भाग देश-विदेश से आए विशेषज्ञों ने की 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा स्थिरता और स्वास्थ्य से जुड़े विषयों पर चर्चा, शोध पत्र किए प्रस्तुत

भारत न्यूज | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन मगलबार को विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। इसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रब्लेम वैज्ञानिकों ने वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए बाजरा श्रीअनंत, कृषि-व्यवसाय के लिए कृषि-उद्यमिता और उद्योग संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, टिकाऊ कृषि के लिए संसाधन प्रबंधन और एकीकृत खेती, फसल उत्पादन में जैविक और अजैविक तनाव प्रबंधन की विधियां, प्राकृतिक व जैविक खेती, कृषि उत्पादन बढ़ाने में सूक्ष्म जीवों का योगदान सहित अनेक विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए।

पहले सत्र का मुख्य विषय जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, संसाधन प्रबंधन एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन रहा। इसमें जर्मनी से डॉ. डिटर एच. त्रुट्ज ओस्नाबुर्क चेयरपर्सन रहे। उन्होंने वैश्विक जलवायु परिवर्तन विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। साथ को-चेयरपर्सन ब्राजील से डॉ. फ्रांसिस्को फिगिंओं ने ब्राजील में जोत प्रणाली प्रबंधन विषय पर व्याख्यान दिया। दूसरे सत्र में मॉडलिंग, साइमुलेशन तथा बिग डाटा प्रबंधन विषय पर चेयरमैन मैक्सिको से डॉ. मैक्सवेल मकोडीवा ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया।

सांस्कृतिक संध्या... विदेशी मेहमानों के सामने हरियाणी डांस की प्रस्तुति



हिसार | हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पहुंचे 15 देशों के वैज्ञानिकों और शोधार्थियों के आगमन को लेकर आईजी ऑफिटिरियम में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इस मौके पर हरियाणी डांस प्रस्तुत देते हुए विद्यार्थी।



'खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए उद्योग संपर्क और कृषि व्यवसाय' पर व्याख्यान दिया

छठे सत्र का विषय 'कृषि अर्थव्यवस्था के लिए कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण जीव, जलकृषि और पशुधन' रहा, जिसकी अध्यक्षता मिस्ट्र के डॉ. होसम रुशादी ने की व जलवायु परिवर्तन और पशुधन उत्पादन प्रशंसन और अनकलन

व्यवसाय' विषय पर व्याख्यान दिया, साथ ही सत्र की अध्यक्षता की। कजाखस्तान से डॉ. विक्टर कामकिन ने 'औषधीय फसल को कोविड-19 के खिलाफ दवाओं के स्रोत के रूप में उपयोग' विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया। आठवें सत्र में

दिया। नौवें सत्र में डेनमार्क से डॉ. अहमद जहूर ने फसल सुधार के लिए पारंपरिक प्रजनन, जैव प्रौद्योगिकी, जैव सूचना विज्ञान, अनुवाशिक इंजीनियरिंग, जिनोमिक्स, जीनोमिक्स और प्रेटिओमिक्स' विषय पर अध्यक्षता करते हुए अपना



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्प्राचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
२१ नवंबर २०२२	६ - १२-२३	२	६

## मिट्टी और जल जीवन के स्रोत, मिट्टी का प्रबंधन नहीं किया तो उर्वरता हो सकती है नष्टः डॉ. मनोज

भारतरन्ध्र | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मांतवार को विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस मनाया गया। विवि के मृदा विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों सहित किसानों व कृषक महिलाओं ने भी हिस्सा लिया।

इस अवसर पर मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने कार्यक्रम में कहा कि मिट्टी और जल जीवन का स्रोत है। मिट्टी हमारे द्वारा खाए जाने वाले प्रत्येक भोजन, चाहे वह शाकाहारी हो या मांसाहारी, प्रत्येक कोर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मिट्टी से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा कि वास्तव में मिट्टी जीवों, खनिजों और कार्बनिक घटकों से बनी एक दुनिया है, जो मनुष्यों और जानवरों के लिए भोजन प्रदान करती है। हमारी तरह, मिट्टी को भी स्वस्थ रहने के लिए उचित मात्रा में पोषक तत्वों की संतुलित और विविध आपूर्ति की आवश्यकता होती है, दर फसल के साथ मिट्टी पोषक तत्वों को खो देती है। यदि मिट्टी का प्रबंधन नहीं किया जाता है तो उसकी उर्वरता धोरे-धीरे नष्ट हो जाती है और इस मिट्टी में उगने वाले पौधों-फसलों में पोषक तत्वों की कमी होगी। यह दुनिया भर में खाद्य सुरक्षा और स्थिरता के लिए एक गंभीर समस्या के रूप में पहचानी गई है। कार्यक्रम में डॉ. राजपाल यादव, डॉ. किरण कुमारी, डॉ. राम प्रकाश ने मृदा से जुड़े विषयों पर व्याख्यान दिए। इस अवसर पर डॉ. दिलेश तोमर, डॉ. देव राज, डॉ. कृष्ण कुमार भारद्वाज, डॉ. गोहियास कुमार, डॉ. रामसंकर सिंह, डॉ. सुशील, डॉ. सनीया, डॉ. दीपिका, डॉ. उषा, डॉ. हरदीप, डॉ. पंकज, डॉ. सुशील, डॉ. विकास, डॉ. अंकुश, डॉ. सीमा व डॉ. रुही मौजूद रही।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्बन्धित पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
२०१५ जागरण	६-१२-२७	३	५

## मिट्टी और जल जीवन का स्त्रोत : डा. मनोज

जागरण संवाददाता, हिसार  
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि  
विश्वविद्यालय में मृदा विज्ञान विभाग  
की तरफ से विश्व मृदा स्वास्थ्य  
दिवस मनाया। मृदा विज्ञान विभाग  
के अध्यक्ष डा. मनोज कुमार शर्मा  
ने कहा कि मिट्टी और जल जीवन  
का स्त्रोत है क्योंकि मिट्टी हमारे  
द्वारा खाए जाने वाले प्रत्येक भोजन,  
चाहे वह शाकाहारी हो या मांसाहारी,  
प्रत्येक कोर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप  
से मिट्टी से जुड़ा हुआ है। उन्होंने  
कहा हमारी तरह, मिट्टी को भी  
स्वस्थ रहने के लिए उचित मात्रा  
में पोषक तत्वों की संतुलित और  
विविध आपूर्ति की आवश्यकता होती  
है क्योंकि प्रत्येक फसल के साथ  
मिट्टी पोषक तत्वों को खो देती है।  
यदि मिट्टी का प्रबंधन नहीं किया  
जाता है, तो उसकी उर्वरता धीरे-धीरे  
नष्ट हो जाती है और इस मिट्टी में  
उगने वाले पौधों-फसलों में पोषक  
तत्वों की कमी होगी। उन्होंने कहा  
दुनिया की तीनीस प्रतिशत मिट्टी  
खराब हो चुकी है। यह दुनिया भर  
में खाद्य सुरक्षा और स्थिरता के  
लिए एक गंभीर समस्या के रूप में  
पहचानी गई है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उत्तीत समाचार	६-१२-२३	५	१-२

## हृकृति में मनाया विश्व मृदा दिवस

हिसार, ५ दिसम्बर (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आज विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस मनाया गया। विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों सहित किसानों व कृषक महिलाओं ने भी भाग लिया। इस अवसर पर मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने कार्यक्रम में बोलते हुए कहा कि मिट्टी और जल जीवन का स्त्रोत है क्योंकि मिट्टी हमारे द्वारा खाए जाने वाले प्रत्येक भोजन, चाहे वह शाकाहारी हो या मांसाहारी, प्रत्येक कोर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मिट्टी से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा बास्तव में मिट्टी जीवों, खनिजों और कार्बनिक घटकों से बनी एक दुनिया है, जो मनुष्यों और जानवरों के लिए भोजन प्रदान करती है। हमारी तरह, मिट्टी को भी स्वस्थ रहने के लिए उचित मात्रा में पोषक तत्वों की संतुलित

और विविध आपूर्ति की आवश्यकता होती है क्योंकि प्रत्येक फसल के साथ मिट्टी पोषक तत्वों को खो देती है। यदि मिट्टी का प्रबंधन नहीं किया जाता है, तो उसकी उर्वरता धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है और इस मिट्टी में उगने वाले पौधों/फसलों में पोषक तत्वों की कमी होगी। उन्होंने कहा दुनिया की तैंतीस प्रतिशत मिट्टी खराब हो चुकी है। यह दुनिया भर में खाद्य सुरक्षा और स्थिरता के लिए एक गंभीर समस्या के रूप में पहचानी गई है। कार्यक्रम में डॉ. राजपाल यादव, डॉ. किरण कुमारी, डॉ. राम प्रकाश ने मृदा से जुड़े विषयों पर व्याख्यान दिए। इस अवसर पर डॉ. दिनेश तोमर, डॉ. देव राज, डॉ. कृष्ण कुमार भारद्वाज, डॉ. रोहतास कुमार, डॉ. रामश्वर सिंह, डॉ. सुशील, डॉ. सोनिया, डॉ. दीपिका, डॉ. उषा, डॉ. हरदीप, डॉ. पंकज, डॉ. सुशील, डॉ. विकास, डॉ. अंकुश, डॉ. सीमा व डॉ. रुही मौजूद रही।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	05.12.2023	--	--

हिसार

मंगलवार, 05 दिसंबर 2023

विशेषज्ञों ने 'वैशिवक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्थान्त्रिय पर प्रस्तुत किए शोध पत्र

卷之三

हिमाया। नौसोने चारप लिंग स्त्रीलिंग कुरी  
विवरणिकामा ये 'वैदिका वाहा-वीराम  
मुखा, विषा और व्यवध के लिए लगती' विषा का आवैज्ञानीय विषयांग और विद्युत  
सम्बन्ध के द्वारा इन विभिन्न विषयों पर  
कारोबार हड्डी पर आवेदन किया गया,  
जिसमें देश-विदेश के सभी संस्कृतीय से अलग  
ग्रन्थों वैज्ञानिकों ने वैदिक पंक्ति सुनाया हो  
जाता है जिसके लिए वाहा लीला, वृत्ति-  
व्यवस्था के लिए वृन्द-उमिता और उत्तो  
संवेद, गायत्री पवित्री, संविता वृत्ति,  
टिकड़ कथि के लिए संसाधन युक्ति और  
एकीकृत वृत्ति, वाहा उत्तोदाम में वैष्णव और  
अवैष्णव उत्तोदाम प्रबोधन की विविध, प्राचुरिक  
व वैशिक उत्तो, कुरी उत्तोदाम लक्ष्मी में लक्ष्म  
जीवी वाहा वैष्णव भक्ति उत्तेक विवरी वा  
वाहादाम भृत्या लिए।

पहली गाँड़ का मुख बिल्कुल चाहावा  
पीछे से, मस्तिष्क तक, मस्तिष्क तक तरी  
एवं उनका पृथीवी द्वारा रखा, जिसमें जर्मनी में  
दू. दिल्ली एवं द्रुग्य और अन्यकुल के लालसी है।  
उन्होंने खोजकर, कलाकार पीछे बढ़िया बिल्कुल पर



होते पर भी प्रायः लिखा। साथ ही चौ-  
चौरसीने प्रायः लिखा है। प्रायः लिखा किंगड़ों  
ने लिखा है जो अल्पी प्रायः लिखा का  
कालाकाल लिखा। दूसरे सब में चौरसीने,  
महासुखों तथा विश्वासुखों में है, चौरसीने लिखा के  
ने कृष्ण प्रायः प्रायः में दिक्षात्मक के लिए  
दृष्टि प्रायः लिखा का कालाकाल लिखा। महाचौरसीने  
ज्ञान से है, उपरोक्त लिखाओं ने ज्ञान की  
कृष्ण पर निर्विवाह लिखाए के भाव का मुख

सोने प्रकाश दिया। तीव्र सर्व में उत्तमता  
आनुभव तक पहुँची। जौ भूखला दिया,  
अंतर्गत लेखामर्त्त प्रसंग के अर्द्धपीढ़ीमें बन  
प्राप्ति द्वारा के रहा। विजया प्रीतिमाला आधी  
देवेन्द्र ने अंतर्गत द्वय व राघुपति मारा था। हिं  
फाल उपराज व सम्मानिता दिया  
बद्धकरा दिया, जबकि सर्व-कैराणीय उ  
से आठ प्रसाद दियोग्य हुए, जिन्हें राजा  
कर्तव्यकर आदाय हुए। पर्वतीष्ठा राजदूत ने  
परि प्रसादी पुरुषों व दूरे एवं दूरीं

पालिंग लिया पर उन्होंने कलहान दिए। पांच सद्गुरु में पक्षत उत्तराधि में जीविक व अर्थीकरण प्रबोधन लिखने के लिए एक पैलेट से उत्तराधि हुक्मान्वय में एक बड़ी कालीन लिपि पर लगायी गयी इसका लिखने वाले जीविक व अर्थीकरण की भवित्व अद्य की जाकर नाभिकानाम हैं। विकार वस्त्रीकृत ने सद्गुरुजी के लिए एक 'उत्तराधि' के लिए दूसरी भी एक अन्य वस्त्रीकृत लिपि लिखी और पालिंग

एन के सौन हर पाया पढ़ते तिलों अपनी मिल के दूर, देख रहे थे वे सैक्षण ने दूरी में चल ने वी य वस्त्र धीर्घ और प्राप्त की।

की सर में अधीक्षित की देवसाम पर एंट एम पूर्ववासियों के संग्रह नेहों लीकर बही हो गई। कापांत्रिक चेपल्सन जी भूमिका निभाते हुए पार्टीनेशन का आखिरी बृंद पहुंच विषय पर अधीक्षित थार्ड, जिसमें हुई घोषणा ने सह-फैमिली की भूमिका भद्रा दी। सौरेश ने फैलोवर्स की अधीक्षितिग विषय पर वह हुई गुरुदेव चंद्र ने इन्डियनोंनक एवं पर अपने व्यवहार का प्रभाव उपचार में अधीक्षित अधीक्षित विषय के अंतर्गत पौलेज से हुई। विषय में एंटरप्रार्टिक द्वार्याली हुए एवं एक दूसरे विषय व चेपल्सन ही अब ही, अपनी वाग़वाजान के द्वारा व्यवहार ने सह-फैमिली की छठे सह का विषय 'कृषि विषय के लिए' की जीत हुई है। यह विषय पर अपनी व्यवहार विषय पर अपनी व्यवहार ने 'खाता और योग्यता युक्त के लिए' वापेस लाई है और 'कृषि व्यवसाय' विषय पर व्यवहार लिया, सह की सह की अधीक्षित थी। कवायदागां ने यह विषय वापसीन ने 'अंतर्राष्ट्रीय वापसीन और कॉमोड-19 के विषय एवं उनके संस्कृत के बाय में उपलेख विषय पर युक्त रोप व्यवहार विषय आठवें सत्र में अधीक्षित थार्ड, नई विषयों से अलग हो, जोन द्वारा 'वैश्विक पोर्टल युक्त और स्वाक्षर के लिए श्रीउमा' विषय पर अधीक्षित वापसीन व्यवहार लिया। नई एवं सह में द्वैपक्षी से हुई अलग द्वारा ने व्यवहार सह के लिए वाहानीक व्यवहार, जैव प्रीतीकीरी, जैव एवं विषय, अनुकूलिक इन्डियनीप, निर्गोलेवस, जैवमियवस और 'प्रैटिकलोवस' विषय पर अधीक्षित वापसी द्वारा व्यवहार लिया। दसवें सत्र में व्यवहार से व्यवहार ले तोप ने 'स्वाक्षर के लिए प्रैक्टिक और वैश्विक द्वारा' विषय पर अपनी व्यवहार लिया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	05.12.2023	--	--

## अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में विशेषज्ञों ने 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य पर प्रस्तुति' विषय पर अध्योजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रश्नात वैज्ञानिकों ने वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए बाजार श्रीअब्र, कृषि-व्यवसाय के लिए कृषि-उत्पादित और उद्योग संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, टिकाऊ कृषि के लिए संसाधन प्रबंधन और एकीकृत खेती, फसल उत्पादन में जैविक और अजैविक तनाव प्रबंधन की विधियां, प्रकृतिक व जैविक खेती, कृषि उत्पादन बढ़ाने में सहम जीवों का योगदान सहित अनक विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए।



आंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन विषय पर प्रस्तुति व्याख्यान के दौरान।

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति' विषय पर अध्योजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रश्नात वैज्ञानिकों ने वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए बाजार श्रीअब्र, कृषि-व्यवसाय के लिए कृषि-उत्पादित और उद्योग संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, टिकाऊ कृषि के लिए संसाधन प्रबंधन और एकीकृत खेती, फसल उत्पादन में जैविक और अजैविक तनाव प्रबंधन की विधियां, प्रकृतिक व जैविक खेती, कृषि उत्पादन बढ़ाने में सहम जीवों का योगदान सहित अनक विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए।

पहले सत्र का मुख्य विषय जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, संसाधन प्रबंधन एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन रह, जिसमें जर्मनी से डॉ. डिटर एवं त्रुटज ओसाकुक

डियरेक्टर अटारी डॉ. परविंदर शोराण ने धान की पहली प्रबंधन व डॉ. रमसिंह ने मेघालय बज्य के बरेली सत्र पर खाद्य पदार्थों के मेवन के पैटर्न के बारे में चर्चा की।

जैविक सत्र में अमेरिका की टेक्सास ए एंड एम यूनिवर्सिटी के संकाय फेलो प्रोफेसर सर्जिंओ सी. कापारेडा चेयरमैनकी भूमिका निभाते हुए मशीनीकरण अधिरित कृषि प्रदूषित विषय पर रणनीतियां बताईं। पंचवें सत्र में फसल उत्पादन में जैविक व अजैविक तनाव प्रबंधन विषय के अंतर्गत पौलेंड से डॉ. टकाओ इशिकावा ने एंजाइमेटिक उद्यासिटी विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया व चेयरमैन की भूमिका अद्य की। छठे सत्र का विषय 'कृषि अर्थव्यवस्था' के लिए कृषि की दृष्टि

से महत्वपूर्ण जैव, जलसुधार और पशुधन' रहा, जिसकी अवधारणा निस्त्र के डॉ. हेसम रुशदी ने की। सातवें सत्र में फास से डॉ. बोचाइब खदरी ने 'खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए उद्योग संसर्क और कृषि व्यवसाय' विषय पर व्याख्यान दिया। काजगुस्तान से डॉ. विक्टर कामकिन ने 'औषधीय फसल को कोविड-19 के खिलाफ दवाओं के स्रोत के रूप में उपयोग' विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया। आठवें सत्र में आइसीएआर, नई दिल्ली से आए डॉ. सेन दास ने 'वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए श्रीअब्र' विषय पर अध्ययन कर अपना व्याख्यान दिया। नौवें सत्र में डेनमार्क से डॉ. अहमद जहूर ने फसल सुधार के लिए परंपरागत प्रबन्धन, जैव प्रैशोगिकी, जैव सूचना विज्ञान, अनुशासिक इंजीनियरिंग, जिनामिक्स, जीनोमिक्स और प्रेटिओमिक्स' विषय पर अध्ययन करते हुए व्याख्यान दिया। दसवें सत्र में जापान से प्रोफेसर यो तोमा ने 'स्वास्थ्य के लिए प्राकृतिक और जैविक खेती' विषय पर अपने व्याख्यान दिया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	05.12.2023	--	--

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में देश-विदेश से आए विशेषज्ञों ने तैयारि कानून-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य से जुड़े विषयों के लिए प्रस्तुत किए शोध पत्र

समाज इतिहासा वृत्ति

हिमार, ५ दिसंबर। पश्चोदीपा ने कृषि खाता प्रगती में टिकाड़ान के लिए दाढ़ा प्रवेशन पर अध्यक्षता दिया। उस-पेपरमें जापान की दूर दूल्हो शिवायी के जापान की कृषि पर न-यूक्सिलग्य हाईसे के प्रभाव पर मुख्य सौध प्रस्तुत किया। सौधे सब में किसानों द्वाका अध्युपनिक उत्कर्षों को पर्याप्तता किये के अंतर्गत पेपरपर्सन फॉरम के आईपीसीसी नोडल प्रशासकार के द्वारा-विशेष प्रीके सर अवर्धर गी, रिटेलर वे अंतर्राष्ट्रीय य राष्ट्रीय सर पर टिकाक फन्सन इन्डस्ट्रीज व सम्बन्ध विकास विषय पर अध्यक्षता दिया, जबकि दूर-पेपरमें उद्यमपूर्व से बाए भास्तव्य विशेषज्ञ और जॉके, गमी हो। छारोरेटर अटलों दूर प्रवित्त झौलाण में भाग की पश्चाती प्रवेशन व दूर सामिन्ह वे विस्तार राष्ट्र के घोर्स सर पर साध पश्चाती के लोकन के वीर्ह के भारे में भार्ची हो। चीजे भार में अमेरिका की टेक्नोलॉजी पर एक एम चूमियांसिंही के संकाय फेलो ड्राफेलर सॉर्टिंगों से, कापोडा पेपरमें की भूमिका निभाते हुए भास्तव्यीकरण अध्यारित कृषि चढ़ाव विषय पर लानीहिंक असर, विषयमें ही मुकेज जैसे ने दूर-पेपरमें की भूमिका निभाई। दूर सूचै ने विश्ववित्तक इंडीनियांडो विषय पर य दूर गुरुदेव चंद ने हार्ड्यूडीनिक फार्मिंग विषय पर अपनी अध्यक्षता दिया। चीजेवे सब में फन्सन इन्डस्ट्रीज में जीविक व जलीविक हन्दाय प्रवेशन विषय के अंतर्गत भीर्ह हो दूर दूल्हो इशिकाया वे



एंजाइमेटिक डायग्नोस्टिक विषय पर मुख्य सांकेत्रिक प्रश्नावली किया गया था। वैज्ञानिक कठीनी की, जबकि कार्बोहाइड्रेट और लूपिंग की भूमिका अद्दा की, जबकि कार्बोहाइड्रेट के लिए वैज्ञानिक कार्बोहाइड्रेट के लिए वैज्ञानिक कार्बोहाइड्रेट की भूमिका निभाई। उठे बाब्प का विषय 'कृषि अधिकारियों के लिए कृषि की दृष्टि से महात्मपूर्ण जीव जलसंरक्षण और चर्यावान' रहा, जिसकी अध्यक्षता विजय के ही होशम लकड़ी ने की थी या जलसंरक्षण परिवर्तन और पर्यावरण प्रभाव और उत्तराधिकार राजनीतिक? विषय पर म्यालुमान दिया। साहबों सभा में प्रांग से हीं, योगाद्वय खट्टर ने 'कृषि और दोषक सुधार के लिए उत्तराधिकार और कृषि व्यवस्था' विषय पर म्यालुमान दिया, जबकि दूसरी सभा की अध्यक्षता की। कार्बोहाइड्रेट से हीं, विजय कार्बोहाइड्रेट के 'अधिकारी फलस्वरूप को' कोविड-19 के विकास द्वारा दोषक के सभा में उपर्योग' विषय पर मुख्य शोध प्रयत्न किया। उठे बाब्प सभा में उत्तराधिकार नहीं दिये गए थे आए हीं, में दाम ने 'कृषि के लिए प्राकृतिक और जीविक सेवी' किया पर अपने अध्यक्षता कर अपना म्यालुमान दिया। नीचे सभा में दैवार्थी ने हीं अध्ययन अध्ययन के विषय पर म्यालुमान सुधार के लिए वार्तालालिक प्रबन्धन, जैव प्रौद्योगिकी, जैव सूक्ष्मा विज्ञान, अनुशोधिक इनीशियारिएट, विनियोगिक, जीवीभावन और द्विविद्योभाव' विषय पर अध्यक्षता करते हुए अपना म्यालुमान दिया। इसमें सभा में जारी हो गए थे दोस्रों भी दोस्रों ने 'व्यवस्था के लिए प्राकृतिक और जीविक सेवी' किया पर अपने अध्यक्षता कर अपना म्यालुमान दिया।



**चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,  
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय**

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	05.12.2023	--	--

# हकूमि में मनाया गया विश्व मृदा दिवस

हिसार ( चिराग टाइम्स )

हिसार- चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आज विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस मनाया गया। विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों सहित किसानों व कृषक महिलाओं ने भी भाग लिया।

इस अवसर पर मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने कार्यक्रम में बोलते हुए कहा कि मिट्टी और जल जीवन का स्रोत है क्योंकि मिट्टी हमारे द्वारा स्वाएं जाने वाले प्रत्येक भोजन, चाहे वह शाकाहारी हो या मांसाहारी, प्रत्येक कोर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मिट्टी से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा जास्तव में मिट्टी जीवों, खनिजों और कार्बनिक



घटकों से बनी एक दुनिया है, जो मनुष्यों और जानवरों के लिए भोजन प्रदान करती है। हमारी तरह, मिट्टी को भी स्वस्थ रखने के लिए अचूत मात्रा में पोषक तत्वों की संतुलित और विविध आपूर्ति की आवश्यकता होती है क्योंकि प्रत्येक फसल के साथ मिट्टी पोषक तत्वों को खो देती है। यदि मिट्टी का प्रबंधन नहीं किया जाता है, तो उसकी उर्वरता धीरे-धीरे

नष्ट हो जाती है और इस मिट्टी में उगने वाले पौधों/फसलों में पोषक तत्वों की कमी होगी। उन्होंने कहा दुनिया की तीसीस प्रतिशत मिट्टी खगड़ हो चुकी है। यह दुनिया भर में खाद्य सुरक्षा और स्थिरता के लिए एक गंभीर समस्या के रूप में पहचानी गई है। कार्यक्रम में डॉ. राजपाल यादव, डॉ. किरण कुमारी, डॉ. राम प्रकाश ने मृदा से जुड़े विषयों पर व्याख्यान दिए।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	05.12.2023	--	--

## हकृति में मनाया विश्व मृदा दिवस

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आज विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस मनाया गया। विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों सहित किसानों व कृषक महिलाओं ने भी भाग लिया। इस अवसर पर मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने कार्यमन्त्रम में बोलते हुए कहा कि मिट्टी और जल जीवन का स्त्रोत है क्योंकि मिट्टी हमारे द्वारा खाए जाने वाले प्रत्येक भोजन, चाहे वह शाकाहारी हो या मांसाहारी, प्रत्येक कोर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मिट्टी से जुड़ा हुआ है।